

अग्नि बचाव - बेहतर विकल्प

श्रीमती शशी सिंह, अनुवादक
बी.एच.ई.एल., हरिद्वार।

“असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्मा अमृतंगमय”

भूमिका

‘मृदा, आकाश, वायु, नीर और अग्नि’ ये पाँच तत्व जीव की संरचना के मूल आधार हैं। यूँ तो प्रत्येक तत्व का अपना पृथक महत्व है तथापि इन पाँचों तत्वों में अग्नि तत्व सर्वोच्च माना गया है। भारतीय पौराणिक ग्रन्थ ऋग्वेद में इन्द्र देव के बाद, अग्नि देव की स्तुति प्रशंसा में सर्वाधिक श्लोक मिलना इस तथ्य को प्रमाणित करता है कि जल और अग्नि की शक्ति मानव के लिए कितनी प्रभावकारी है। संभवतः इन दोनों तत्वों की विध्वंसक एवं सृजनात्मक शक्ति के कारण ही ये तत्व मानव की आस्था का केन्द्र भी बने हैं।

ऋग्वेद में अग्नि के तीन स्वरूपों का विषद वर्णन है। आकाश का सूर्य तो सार्वभौमिक आराधना का केन्द्र है ही, अन्तरिक्ष में विद्युत एवं पृथ्वी पर अग्नि भी इस तत्व के रूप में हैं। जीव सृजन में परम आवश्यक यह तत्व जहाँ अपनी विशेष प्रभावित रखता है। वहीं अग्नि यानि आग का स्मरण जहन में मौत, स्वाहा, नाश, विध्वंस और भी न जाने कितने भयावह पर्यायवाची विकराल शब्दों को मानस पटल पर उभार जाता है। परन्तु यह भी सत्य है कि इसी अग्नि ने हमारे इतिहास में कदम रखकर सभ्यता की घुणचक्री को घुमाया तब कहीं आज हम इस सभ्यता के एक अंश बन पाये हैं। मानव की विकास कहानी अग्नि के चहुँओर घूमती है। मूलभूत यथार्थ रूप में अग्नि या आग हमारा उत्थान करती है, परन्तु जरा सी लापरवाही पर यह विकराल रूप लेकर सर्वनाश भी कर सकती है।

बम्बई का डॉकयार्ड कांड हो या दिल्ली का उपहार सिनेमा कांड। नरौरा का भीषण अग्निकांड हो, अथवा मेरठ का भयावह अग्निकांड, अनेकों ऐसे उदाहरण दिए जा सकते हैं जब मानव ने इस प्राण तत्व के साथ असावधानी बरती तो इसके कुपित रूप ने अनेकों की आहूति ले ली। तभी तो किसी ने कहा है- ‘अग्नि से मत खेलो भाई, यह तो देती मौत की दुहाई!’

अग्नि को अगर उपयोगिता में लाना हो तो उसे वश में करना बहुत आवश्यक होता है। वश में करने का एक ही उपाय होता है कि इसके बारे में विस्तृत जानकारी तथा इसके उपयोग करने का प्रशिक्षण लेना। उचित ज्ञान एवं प्रशिक्षण से न केवल अग्नि के प्रभाव से बचा जा सकता है अपितु इसका उचित उपयोग कर मनुष्य अपना जीवन सुरक्षित बनाये रख सकता है। प्रशिक्षण तथा इसके उपयोग हेतु अनेक माध्यम प्रभाव में हैं।

बचाव का माध्यम

बचाव तथा उचित उपयोग एक ही सिक्के के दो पहलु हैं। इस योजना में निम्न सोपान प्रयोग किए जाते हैं-

- 1- अग्नि तथा उससे होने वाले विनाश के कारणों की विस्तृत जानकारी देना।
- 2- अग्नि के रूप की चर्चा तथा इस त्रासदी से लड़ना सिखाना।
- 3- अग्निशमन का उपयोग बताना।
- 4- इस प्रकरण में पानी की उपयोगिता बताना, पानी का उपयोग कहां और कैसे करना है यह बताना।
- 5- बी.ए. अर्थात् श्वास उपकरणों का आवश्यकता पड़ने पर प्रयोग।
- 6- अग्नि संबंधित चलचित्र दिखाना।
- 7- उचित बचाव की जानकारी देना।
- 8- लापरवाही घातक होती है, इसकी जानकारी देना।

आग अर्थात् अग्नि क्या है?

“Fire is a decomposition of material with absorption of heat in presence of oxygen.” अर्थात् “किसी पदार्थ के ऊष्मा की सहायता से ऑक्सीजन की उपस्थिति में अपने सूक्ष्म कणों में बदल जाने को आग कहते हैं।”

आग के तत्व-

- 1- वायु अथवा ऑक्सीजन
- 2- ऊष्मा अथवा प्रज्वलन ताप
- 3- ईंधन अथवा जलने योग्य पदार्थ

इन तत्वों का संबंध निम्नानुसार दिखाया जा सकता है:-

अग्नि त्रिभुज

उष्मा

वायु

ईंधन

आग बुझाना

वायु अथवा ऑक्सीजन, ऊष्मा अथवा प्रज्वलन ताप तथा ईंधन अथवा जलने योग्य पदार्थ, ये तीन घटक आग के लिए उत्तरदायी हैं। इनमें से एक घटक को यदि हटा दिया जाये तो आग बुझ जाती है।

अग्नि शमन

शीतल

वायु या अग्निशमन हटाना

ईंधन का अभाव

- ऑक्सीजन की आपूर्ति रोकना।
- शीतलन।
- ईंधन का अभाव या दहन क्षेत्र से ईंधन को हटाना।

आग का वर्गीकरण

- वर्ग ए- साधारण ज्वलनशील पदार्थ जैसे- लकड़ी, कागज, वस्त्र आदि में लगने वाली आग।
- वर्ग बी- तेल, विलायक, पेट्रोलियम उत्पाद, वार्निश, पेन्ट आदि ज्वलनशील द्रव पदार्थों में लगने वाली आग।
- वर्ग सी- ऐसिटिलीन, हाइड्रोजन, घरेलू रसोई गैस, आदि में लगने वाली आग
- वर्ग डी- मैग्नीशियम, सोडियम, पोटेशियम, जिंक आदि धातु पदार्थों में लगने वाली आग।
- वर्ग ई- जहां विद्युत धारा प्रवाहित हो रही हो और इसे बंद न किया जा सके।

आग बुझाने के लिए माध्यम-

वर्ग	माध्यम
ए	पानी, मिट्टी, रेत, आग को पीटना, कंबल, सोडा एसिड टाइप अग्निशमन, गैस, वॉटर टाइप अग्निशमन, CO ₂ अग्निशमन का प्रयोग।
बी	फोम टाइप अग्निशमन, एएफएफएफ अग्निशमन, CO ₂ अग्निशमन, ड्राई कैमीकल पाउडर अग्निशमन, हैलोन अग्निशमन।
सी	CO ₂ अग्निशमन, ड्राई कैमीकल पाउडर अग्निशमन, हैलोन अग्निशमन
डी एवं ई	स्पेशल ड्राई पाउडर अग्निशमन, हैलोन अग्निशमन

अग्निशमन

वाटर टाइप अग्निशमन

यह आईएस 2190-1976 ए. श्रेणी की आग बुझाने में प्रयोग होता है। इसके द्वारा आग पर पानी फेंक कर भाप द्वारा ऑक्सीजन कम करके आग बुझायी जाती है।

गैस वाटर टाइप अग्निशमन यंत्र

तेल, सॉल्वेट, पेट्रोलियम पदार्थ, वार्निश, आदि पर इसे प्रयोग किया जाता है। इसमें झाग बनता है जो पदार्थ का हवा से संपर्क खत्म कर आग बुझाता है।

CO₂ अग्निशमन यंत्र, ड्राई पाडर टाइप अग्निशमन यंत्र, गैस काट्रिज टाइप अग्निशमन यंत्र, ब्रोमो क्लोरो ड्राईक्लोरो मीथेन हैलोन अग्निशमन यंत्र आदि भी आग बुझाने हेतु प्रयोग होते हैं।

सामान बचाना

- आग की संभावित विधि को रोकना।
- भवनों/घरों के निर्माण में अधिक से अधिक ईटों का प्रयोग।
- मकानों में बचाव की उचित व्यवस्था।
- भण्डारण खुले तथा बड़े हों, वहां पर पानी की टॉटी उपलब्ध हों।
- सफाई का ध्यान रखा जाये।
- बिजली उपकरणों की मेंटीनेंस होती रहनी चाहिए।
- अग्निशमन यंत्र लगे रहें।
- आग लगने पर तुरंत सूचना दी जाये।

घरों में सावधानियां

- विद्युत वायरिंग की नियमित जांच होती रहे।
- मीटर मकान के बाहर की ओर लगे हों।
- बिजली के तारों की नियमित जांच होती रहे।
- उपकरणों की की नियमित जांच होती रहे।
- ज्वलनशील पदार्थों का रखरखाव उचित हो।
- गैस आदि की नियमित जांच होती रहे।
- घरों में 'फ्रस्ट एड' का सामान होना चाहिए।
- फायर स्टेशन का टेलीफोन सामने लिखा रहना चाहिए।

परतकालय
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रुड़की

- बच्चों का विशेष ध्यान रखना चाहिए।
- खाना बनाते समय महिलाएं अपने वस्त्रों का विशेष ध्यान रखें, नाइलॉन आदि का प्रयोग घातक होता है, बहुत ढीले वस्त्र भी घातक होते हैं।
- जल की व्यवस्था समुचित रहे क्योंकि दुर्घटना बताकर नहीं आती।
- सावधानी ही बचाव है, इसे ध्यान में रखा जाये।

आग लगने पर क्या करें

- घबराएं नहीं, फायर स्टेशन को फोन करें।
- बच्चों पर ध्यान दें।
- सहायता के लिए चिल्लाएं।
- आग वाली जगह पानी की धार फेंके।
- अग्नि शमन यंत्र का प्रयोग करें।
- बच्चों, बूढ़ों, बीमारों को बाहर निकालें।
- यदि आग का प्रभाव पड़ा हो तो कबल लपेटें, पानी डालें।
- आपकी तत्परता बड़ा हादसा टाल सकती है।
- सहायता करें, सहायता लें - इसका पालन करें।

**सबसे सरल, सबसे अच्छा, सबसे सस्ता तथा सबसे प्रभावी बचाव है,
'सावधानी' एवं 'जागरूकता'**